

---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

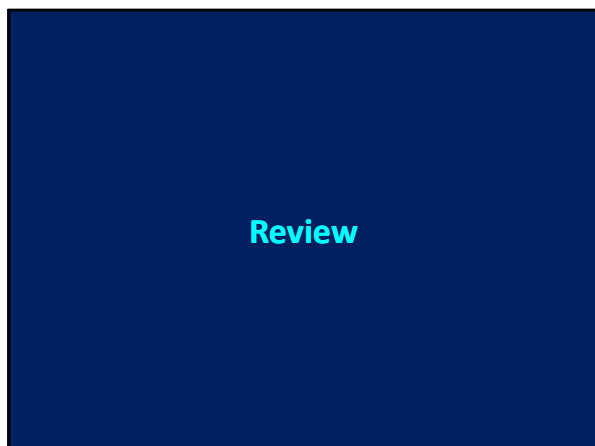
---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

### Answering Eight Questions

- 1) Who wrote it? – Paul
- 2) Who was it written to? – Roman Believers
- 3) Where was it written from? – Corinth
- 4) When was it written? – A.D. 57
- 5) Why was it written? – Doctrinal Foundation
- 6) What is inside? – 7 Part Outline
- 7) What is it about? – Righteousness
- 8) What makes the book different? – Theological formality



---

---

---

---

---

---

---

---

### Structure

- I. Salutation (1:1-17)
- II. Sin (1:18-3:20)
- III. Salvation (3:21-5:21)
- IV. Sanctification (6-8)
- V. Sovereignty (9-11)
- VI. Service (12:1-15:13)
- VII. Summation (15:14-16:27)



---

---

---

---

---

---

---

---

Romans 8:29-30  
29 For those whom He foreknew, He also predestined to become conformed to the image of His Son, so that He would be the firstborn among many brethren; 30 and these whom He predestined, He also called; and these whom He called, He also justified; and these whom He justified, He also glorified.

Where's sanctification?

Where's sanctification?  
these whom He justified, He also glorified.

---

---

---

---

---

---

---

---

# ROMANS 9-11

## THEME

*How can God be trusted to be faithful to us if He has been unfaithful to Israel?*

---

---

---

---

---

---

---

## Structure

- I. Salutation (1:1-17)
- II. Sin (1:18-3:20)
- III. Salvation (3:21-5:21)
- IV. Sanctification (6-8)
- V. Sovereignty (9-11)
- VI. Service (12:1-15:13)
- VII. Summation (15:14-16:27)



---

---

---

---

---

---

---

Ephesians 4:1

Therefore...

1-3



4-6

---

---

---

---

---

---

---

## What Is Inside?

**1-3**

Relationship  
Doctrine  
Orthodoxy  
Knowledge  
Belief  
Position  
Privileges

**4-6**

Responsibility  
Deed  
Orthopraxy  
Wisdom  
Behavior  
Practice  
Responsibility

---

---

---

---

---

---

---

---

## Galatians 5:1

**Therefore...**

**1-4**



**5-6**

---

---

---

---

---

---

---

---

## Romans 12:1

**Therefore...**

**1-11**



**12-**

**16**

---

---

---

---

---

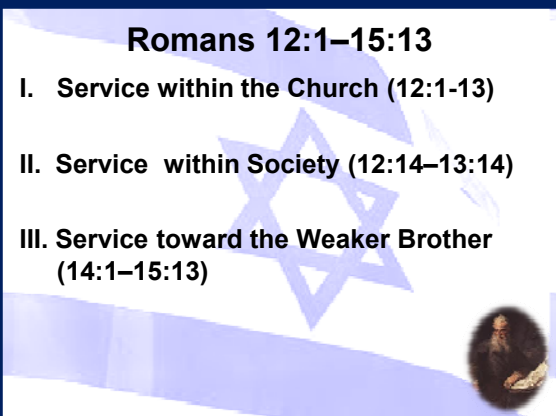
---

---

---

**Romans 12:1–15:13**

- I. Service within the Church (12:1-13)
- II. Service within Society (12:14–13:14)
- III. Service toward the Weaker Brother (14:1–15:13)




---

---

---

---

---

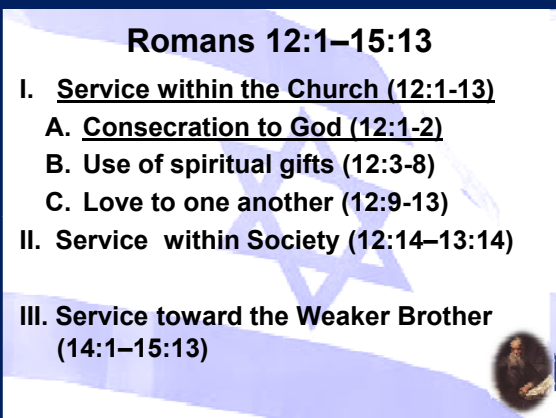
---

---

---

**Romans 12:1–15:13**

- I. Service within the Church (12:1-13)
  - A. Consecration to God (12:1-2)
  - B. Use of spiritual gifts (12:3-8)
  - C. Love to one another (12:9-13)
- II. Service within Society (12:14–13:14)
- III. Service toward the Weaker Brother (14:1–15:13)




---

---

---

---

---

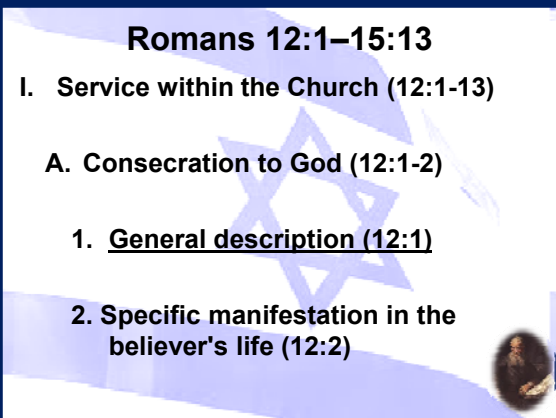
---

---

---

**Romans 12:1–15:13**

- I. Service within the Church (12:1-13)
  - A. Consecration to God (12:1-2)
    - 1. General description (12:1)
    - 2. Specific manifestation in the believer's life (12:2)




---

---

---

---

---

---

---

---

## General Description of the Believer's Consecration to God (Rom 12:1)

- Importance (1a)
- Basis (1b)
- Character (1c)
- Reasonableness (1d)



---

---

---

---

---

---

---

---

## Spiritual Sacrifices

- Body- Rom 12:1
- Praise- Heb 13:15
- Good works- Philip 2:17
- Financial giving- Heb 13:16

---

---

---

---

---

---

---

---

## Romans 12:1–15:13

### I. Service within the Church (12:1-13)

#### A. Consecration to God (12:1-2)

##### 1. General description (12:1)

##### 2. Specific manifestation in the believer's life (12:2)



---

---

---

---

---

---

---

---

### Specific Manifestation in the Believer's Life (Rom 12:2)

- Negative exhortation (2a)
- Positive exhortation (2b)
- Goal (2c)



---

---

---

---

---

---

---

---

### Specific Manifestation in the Believer's Life (Rom 12:2)

- Negative exhortation (2a)
- Positive exhortation (2b)
- Goal (2c)



---

---

---

---

---

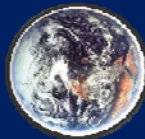
---

---

---

### World System

- *Kosmos*
- A system of philosophy which excludes God and alienates our affections from Him (1 John 2:15-17; 2 Tim 4:10)
- Satanically controlled and energized (2 Cor 4:4)



---

---

---

---

---

---

---

---

## Three Tenses of Salvation

Phase	Justification	<u>Sanctification</u>	Glorification
Tense	Past	<u>Present</u>	Future
Saved from sin's:	Penalty	<u>Power</u>	Presence
Scripture	Eph 2:8-9; Titus 3:5	<u>Philip 2:12</u>	Rom 5:10

---

---

---

---

---

---

---

---

## College of Biblical Studies Doctrinal Statement

- Every true believer is promised positional and ultimate sanctification with the possibility of progressive development in life spiritually, (*progressive sanctification*) (Heb. 10:10,14; Jn. 17:17; Eph. 5:26,27; 1 Thess. 4:3,4; 1 Jn. 3:2).

---

---

---

---

---

---

---

---

Romans 8:29–30  
<sup>29</sup> For those whom He foreknew, He also **predestined** to become conformed to the image of His Son, so that He would be the firstborn among many brethren; <sup>30</sup> and these whom He predestined, He also called; and these whom He **called**, He also justified; and these whom He **justified**, He also glorified.

Where's **sanctification**?

---

---

---

---

---

---

---

---



## Specific Manifestation in the Believer's Life (Rom 12:2)

- Negative exhortation (2a)
- Positive exhortation (2b)
- Goal (2c)



---

---

---

---

---

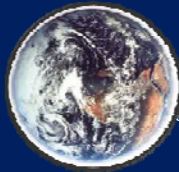
---

---

---

## Victory Over The World System

- Mental Renewal (Rom 12:2)
- Acknowledgment of Christ in you (1 John 4:4)



---

---

---

---

---

---

---

---



---

---

---

---

---

---

---

---

### Specific Manifestation in the Believer's Life (Rom 12:2)

- Negative exhortation (2a)
- Positive exhortation (2b)
- Goal (2c)



---

---

---

---

---

---

---

---

### Conclusion

---

---

---

---

---

---

---

---

### General Description of the Believer's Consecration to God (Rom 12:1)

- Importance (1a)
- Basis (1b)
- Character (1c)
- Reasonableness (1d)



---

---

---

---

---

---

---

---

Specific Manifestation in  
the Believer's Life (Rom  
12:2)

- Negative exhortation (2a)
- Positive exhortation (2b)
- Goal (2c)



---

---

---

---

---

---

---